**ओ३म्**

**“यशस्वी जीवन कीर्तिशेष वेदाचार्य डा. वेदपाल सुनीथ”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आचार्य डा. वेदपाल सुनीथ जी आर्ष व्याकरण एवं वैदिक साहित्य के उच्च कोटि के विद्वान एवं साधक थे। आपने गुरुकुल झज्जर में ऋषि भक्त स्वामी ओमानन्द जी व अन्य आचार्यों के चरणों में बैठकर आपने श्रद्धापूर्वक आर्ष ज्ञान प्राप्त किया था तथा उसी के प्रचार व प्रसार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था। कुछ समय पूर्व ही हमने उनकी पुस्तक शतपथ सुभाषित के आधार पर एक लेख लिखा था। उसके बाद हमें लगा कि उनके जीवन वृतान्त पर भी कुछ जानकारी अपने पाठक मित्रों को दी जाये। उसी की पूर्ति में हमारा यह विनम्र प्रयास है।

श्री वेदपाल वर्णी का जन्म 10 अगस्त 1953 को रोहतक जिले के बरहाणा ग्राम में हुआ। 6 फरवरी, 1997 को जोधपुर में प्रवचन करते हुए हृदयाघात से इनकी मृत्यु हुई थी। मृत्यु के समय इनकी आयु मात्र 44 वर्ष थी। श्री वेदपाल जी के पिता का चैधरी हुक्मचन्द था। आपका अध्ययन गुरुकुल झज्जर (1964-65), प्रभात आश्रम मेरठ (1966-67) तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (1979-81) में हुआ। इन्होंने संस्कृत में एम.ए. तथा पंजाब विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त की। उड़ीसा, मेरठ तथा गुरुकुल होशंगाबाद में आपने अध्यापन भी किया। शतपथ ब्राह्मण का आपने विशिष्ट अध्ययन किया था।

मृत्यु से पूर्व आप राजस्थान के पुष्कर के निकट तिलोरा ग्राम मेंएक गुरुकुल चलाते थे। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा. रामचन्द्र जी आपके ही प्रसिद्ध शिष्य हैं।

आपके लेखकीय कार्य हैं-शतपथ सुभाषित (1983), वैदिक शोध निबन्ध (1984), सोम विमर्श (1985), संस्कृत स्वयं शिक्षक (2039 वि.), माध्यन्दनीय शतपथ दयानन्द याजुषभाष्यर्योस्तुलनात्मकमध्ययनम्। (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध), पं. बुद्धदेव विद्यालंकार कृत शतपथ ब्राह्मण भाष्य (आंशिक) का आलोचनात्मक सम्पादन (1990)।

एक माह पूर्व 6 फरवरी को आपकी 20वीं पुण्य तिथि थी। इस अवसर आपके प्रमुख शिष्य डा. रामचन्द्र जी ने अपनी श्रद्धांजलि के रूप में फेसबुक पर अपने कुछ उद्गार प्रस्तुत किये थे। उन्हें भी पाठकों की जानकारी के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। आपने लिखा, पूज्य गुरुवर आचार्य डॉ वेदपाल जी सुनीथ ! महान् शास्त्रविद, वैयाकरण शिरोमणि, शतपथ ब्राह्मण के अप्रतिम व्याख्याता और विद्वान, तपोनिधि, वैदिक श्रौत परम्परा के अपूर्व प्रवक्ता, संस्कृत के आशु कवि, अनेक कालजयी कृतियों के प्रणेता, 20 वर्ष पूर्व 6 फरवरी, 1997 को जोधपुर के जय नारायण व्यास टाऊन हाल में वेद प्रवचन देते हुए **‘‘आपो वै सः”** शब्दों के उच्चारण के साथ आकस्मिक हृदयाघात से आपने देह त्याग कर दिया था। तब इस धरा ने महान वेद मनीषी को खो दिया। शिष्य अपने महान आचार्य के सान्निध्य से वंचित हो गये। दो दशक बीत गये। उस महान आत्मा का स्थान कोई न ले सका।

मेरा (डा. रामचन्द्र जी का) सौभाग्य रहा कि मुझे पुण्यभूमि तिलोरा (पुष्कर -अजमेर) स्थित उनके आश्रम में रहकर, वर्षों तक उनके श्रीचरणों में बैठकर सम्पूर्ण अष्टाध्यायी, काशिका, व्याकरण महाभाष्य, शतपथ ब्राह्मण और निरुक्त के अध्ययन का सौभाग्य मिला। मुझे उनसे संस्कृत साहित्य के साथ महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य के अनुशीलन का भी सदवसर मिला। उनके द्वारा प्रशस्त पथ पर अग्रसर होने के संकल्प के साथ पूज्य आचार्यश्री को शत शत नमन (श्रद्धानवत डा. रामचन्द्र)। यह भी बता दें कि जिस दिन आचार्य वेदपाल सुनीथ जी का देहान्त हुआ उस दिन भी डा. रामचन्द्र जी ने उनके सान्निध्य में अध्ययन किया था।

हमारे इस लेख को पढ़कर आर्यजगत के प्रसिद्ध युवा विद्वान श्री भावेश मेरजा, भरुच जी ने अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवगत कराया है। उन्होंने लिखा है कि **‘डॉ वेदपाल जी सुनीथ का पुण्य स्मरण कर-कराकर आपने उमदा कार्य किया है। मैं उनसे मिला था, उनके प्रवचन भी सुने थे और स्वल्प पत्राचार भी करने का सुयोग मुझे प्राप्त हुआ था। वे आकर्षक व्यक्तित्व और मौलिकता युक्त महानुभाव थे।’** इस उपयोगी प्रतिक्रिया के लिए हम भी भावेश जी का धन्यवाद करते हैं।

इस अवसर पर हम भी यशस्वी वैदिक विद्वान आचार्य वेदपाल सुनीथ जी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोन-09412985121**

**ओ३म्**

**‘ऋषि जन्म भूमि टंकारा में आयोजित बोधोत्सव’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

इस वर्ष 2017 में 23 व 24 फरवरी को ऋषि बोधोत्सव का पर्व टंकारा स्थित महर्षि दयानन्द स्मारक न्यास की ओर से टंकारा में आयोजित किया गया था। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन हुआ जो सप्ताह भर चल कर 24 फरवरी को सम्पन्न हुआ। हम 23 व 24 फरवरी 2017 के प्रातः एवं सायं के यज्ञों में सम्मिलित हुए और वहां वेद मन्त्रोच्चार सहित यज्ञ में आहुतियों के क्रम, भजन, प्रवचन आदि कार्यक्रमों को देखने व सुनने के साथ हमने सभी यजमानों एवं यज्ञशाला में देश भर से पधारे श्रोताओं के दर्शन भी कियेे। यह दृश्य हमें अपने किसी पुण्य कर्म से अर्जित प्रतीत हो रहा था जिसका कारण इस वातावरण का मन पर जो प्रभाव हुआ, वह सुख एवं आनन्द से युक्त था। यज्ञ के अतिरिक्त टंकारा का इस बार का आकर्षण वहां श्रवण किये पं. सत्यपाल पथिक, अमृतसर और बहिन अंजलि आर्या जी के गीत व भजन थे। बोधोत्सव वा शिवरात्रि को टंकारा की गलियों व मोहल्ले में से होकर निकाली गई शोभायात्रा में भी आर्यों का विशेष उत्साह देखने को मिला। हमने इस शोभायात्रा में लोगों को **‘सर जावे तो जावे मेरा वैदिक धर्म न जावे’** गीत को झूम झूम कर गाते हुए देखा तो हमें इससे मानसिक सन्तुष्टि मिली। आज भी आर्यों का धर्म के प्रति विश्वास व लगन पूरे उत्साह व यौवन पर देखकर प्रसन्नता होती है। वह स्थान भी देखा जहां ऋषि दयानन्द का जन्म हुआ बताते हैं। अब वहां एक भव्य इमारत बना दी गई है। जब ऋषि दयानन्द जन्में होंगे तो यहां कोई झोपड़ीनुमा भवन व हवेली के समान भवन रहा होगा। जन्म गृह पर बनाये गये हाल में ऋषि जीवन को चित्रों के माध्यम से दर्शाया गया है जो ऋषि भक्तों को अच्छा लगता है। एक अन्य भव्य आकर्षण ऋषि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा के परिसर से कुछ दूरी लगभग 1 व 3/4 किमी. पर स्थित टंकारा आर्यसमाज है। इस आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव भी प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव के दिन ही पड़ता है। इस समाज के मंत्री श्री हंसमुख पंवार जी हैं जो एक सेवानिवृत अध्यापक हैं। आपके नेतृत्व में समाज के युवाओं की जो टीम काम करती हैं, उसमें उत्साहपूर्वक कार्य करने की क्षमता है तथा अनेक प्रभावशाली योजनायें बनाकर उस पर कार्य किया जाता है और सफलता प्राप्त की जाती है। इसका वर्णन हम यथास्थान करने का प्रयत्न करेंगे। अन्त में कुछ उल्लेख उस शिव मन्दिर का भी कर दें जहां ऋषि दयानन्द ने अपने चैदहवें वर्ष की वय में शिवरात्रि का व्रत रखा था और रात्रि में चूहों की घटना से उन्हें बोध प्राप्त हुआ था। उसके बाद उन्होंने जीवन भर मूर्ति पूजा नहीं की। जीवन के आरम्भिक वर्षों में वह सच्चे ईश्वर की खोज करते रहे और इसमें उन्हें सफलता प्राप्त की। वह एक सच्चे व सिद्ध योगी बने और इसके साथ ही वेद और वैदिक साहित्य के लगभग 5,200 वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध के बाद वेदों के मर्मज्ञ ऋषि व विद्वान बने जिन्हें वेद की प्रत्युक ऋचा व मन्त्र ने अपने भीतर के रहस्यों को प्रकट किया था। बोधोत्सव के अगले दिन 25 फरवरी, 2017 को इस ऋषि बोध मन्दिर में जाकर हमने वहां का एक वीडियों बनाया और उसे फेस बुक के माध्यम से सार्वजनिक किया जिसे सहस्राधिक लोगों ने देखा और उसकी सराहना की। इस संक्षिप्त जानकारी के बाद अब हम 23 फरवरी, 2017 को सम्पन्न यज्ञ, भजन व प्रवचन पर प्रकाश डालते हैं।

23 फरवरी, 2017 को प्रातः 8:25 बजे यज्ञ आरम्भ हुआ। यज्ञशाला में न्यास के मंत्री श्री अजय सहगल सहित आर्यनेता श्री अरुण अब्रोल, श्री लद्दाराम जी पटेल, यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रामदेव जी, यज्ञवेदी पर यजमानों सहित बड़ी संख्या में देश भर से आये यज्ञप्रेमी ऋषिभक्त विद्यमान थे। संकल्प सूत्र का यजमान महोदय से उच्चारण कराया गया। सभी यजमानों को यज्ञोपवीत दिए गये। यज्ञोपवीत मंत्र का पाठ हुआ और सभी यजमानों ने यज्ञोपवीत धारण किए। आचार्य रामदेव जी के साथ यजमानों ने व्रत लिया कि हम सत्य मार्ग पर चलेंगे। हम वेद विपरीत मार्ग को त्यागते रहेंगे। इसके बाद 8 प्रार्थना मंत्रों का पाठ हुआ व उनके हिन्दी अर्थों का पाठ भी किया गया। स्तुति प्रार्थना व उपासना मंत्रों के बाद स्वस्तिवाचन व शान्तिकरण के मन्त्रों का पाठ किया गया। इसके बाद दीप प्रज्जवन, समिदाधान व पंच घृताहुतियों के मन्त्रों का पाठ भी यथाविधि किया गया। यज्ञ विधि के अनुसार अन्य आहुतियां दी गईं और उसके बाद यजुर्वेद पारायण के अन्तर्गत यजुर्वेद के मन्त्रों की आहुतियां दी गई। आचार्य रामदेव जी ने एक यजुर्वेद मन्त्र की व्याख्या करते हुए अपने उपदेश में कहा कि चन्द्रमा शान्ति का प्रतीक है। मनुष्य को दो शक्तियों की आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा कि ज्ञान व शान्ति जिन लोगों के पास है वह प्रत्येक कार्य को बहुत अच्छी प्रकार से कर लेंगे। ज्ञानी व्यक्ति कार्य को समझ कर उसकी सफलतापूर्वक पूर्ति को भली प्रकार से करने में समर्थ होते हैं। विद्वान आचार्य रामदेव जी ने कहा कि वसिष्ठ मुनि ने राम चन्द्र जी को दो शक्तियों दीं जिसमें प्रथम शान्ति व दूसरा ज्ञान था। प्रत्येक महापुरुष में ज्ञान व शान्ति दो मुख्य गुण मिलते है। ज्ञानी मनुष्य उचित व अनुचित को जानकर उचित कार्य करता है। उनेंने कहा कि नासमझ मनुष्य बिना विचारें क्रोध को बाहर निकाल देते हैं। जो मनुष्य भले होते हैं वह वह विचार कर क्रोध में भी चुपचाप रहते हैं। उन्होंने कहा कि जीवन में उत्तरायण तथा दक्षिणायण होते हैं। पहले उत्तरायण चलते हैं। यह ज्ञान का भाग है। यह प्रधान दिशा है। दक्षिणी दिशा शान्ति की प्रतीक है। दक्षिण में सौम्यता है। ज्ञान से सौम्यता आती है। उपनिषदों में इन गुणों की चर्चा है। हमारी प्रत्येक क्रिया में ज्ञान सहित सौम्यता, श्रद्धा व शान्ति भी होनी चाहिये।

विद्वान आचार्य रामदेव जी ने इन्द्र की चर्चा की। उन्होंने कहा कि विद्युत व प्रजापति का नाम भी इन्द्र है। इन्द्र ऐश्वर्यवान् मनुष्य व विद्वानों को कहते हैं। उन्होंने कहा कि वेद कहता है कि हम भी भगवान बन जाये। ऐसी प्रार्थनायें वेदों में है। जिसके पास सम्पत्ति है वह भगवान होता है। अच्छे स्वास्थ्य वाला स्वास्थ्य का भगवान है। बल व यश आदि से युक्त मनुष्य भगवान होते हैं। उपासना वाला भगवान तो सबसे पृथक सर्वव्यापक ईश्वर है। उन्होंने कहा कि उत्तरायण सूर्य व ज्ञान की दिशा है। दक्षिणायण में गर्मी कम होती है। उन्होंने कहा कि यजुर्वेद पारायण यज्ञ के अन्तर्गत हम 33 अध्यायों का पाठ कर आहुतियां दे चुके हैं। आज 34 वें अध्याय के मन्त्रों से आहुतियां दी जा रही हैं। आचार्य जी ने कहा कि विद्युत व सूर्य विद्या का जो ठीक ठीक ज्ञान व प्रयोग करते हैं वह अनेक प्रकार के लाभों को प्राप्त करके सुखी हो सकते हैं। ज्ञानहीन व्यक्ति छोटी छोटी बात के लिए परेशान होने लगता है। इसके बाद आर्यसमाज के तीसरे नियम का सबने मिलकर पाठ किया। सबने मिलकर बोला ‘वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।’ तदन्तर गायत्री मन्त्र का पाठ हुआ और इस मन्त्र से भी यजमानों ने आहुतियां दीं।

टंकारा ऋषि दयानन्द स्मारक न्यास के मंत्री श्री अजय सहगत ने टंकारा न्यास के सहयोगियों का परिचय कराया। उन्होंने यज्ञशाला व न्यास परिसर में अनुशासन बनायें रखने के लिए आवश्यक निर्देश दिये। व्यवस्था बनाये रखने के लिए चण्डीगढ़ के श्री सुशील भाटिया जी के सहयोग की उन्होंने सराहना की। श्री अजय सहगल जी ने एक माता जी का परिचय देते हुए बताया कि इनके पुत्र भारतीय विदेश सेवा में ए श्रेणी के अधिकारी हैं। उन्होंने विदेश में आर्यसमाज की स्थापना की है। यह माता जी नौ महीने टंकारा में रहती हैं। यह सारे विद्यार्थियों की माताजी हैं। यह भजन गाकर यहां सेवा करती हैं। माता अरुणा सतीजा जी का परिचय देते हुए बताया गया कि वह लेखिका हैं और न्यास की सहायक हैं। न्यास की अन्य सहयोगी माता ऊषा अरोड़ा एवं श्री रामचन्द्र अरोड़ा जी का भी परिचय दिया गया। अमरोहा, उत्तर प्रदेश से प्रकाशित मासिक पत्र के सम्पादक एवं प्रकाशक डा. अशोक आर्य जी का परिचय देकर उनका भी सम्मान किया गया। यह बन्धु इस वर्ष टंकारा दो बसे लेकर गये थे और इन्होंने एक अच्छी धनराशि वहां दान में दी। श्री वी.पी. आर्य जी, हरयाणा का भी परिचय दिया गया जो एक बस लेकर टंकारा आये थे। ऐसे अन्य लोगों का परिचय भी मन्त्री श्री अजय सहगल द्वारा दिया गया और उन्हें सम्मनित किया गया। आज बोधोत्सव का विवरण यहीं पर समाप्त करते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**